REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

ज्योति जैन की लघुकथा में सामाजिक संदेश

प्रा. डॉ. मनोहर जमदाडे
एस. एस. ढमढेरे महाविद्यालय तळेगाव ढमढेरे, शिरूर, जि. पुणे

बहुमुखी प्रतिभा की धनी ज्योति जैन का जन्म मालवा के प्रमुख शहर मंदसौर में हुआ है। इन्दौर के न्यू गर्ल्स डिग्री कॉलेज से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ज्योति जैन हिंदी कहानी, कविता, लघुकथा, समीक्षा लेखन एवं सामाजिक विषयों पर एकाधिक आलेखों के रचनाकर्म में संलग्न हैं। कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं निरंतर आपकी रचनाओं का प्रकाशन होता रहा। आकाशवाणी / दूरदर्शन से वार्ताओं का प्रसारण तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन आपने किया है। तथा कई पुरस्कारों से आप सम्मानित हैं। आपकी लघुकथा पाठक को निश्चित रूप से सोचने के लिए मजबूर करती है। इस संदर्भ में शिक्षा, पानी के पेड, पशुभाषा, अपशगुन आदि लघुकथाएँ महत्वपूर्ण हैं। आपने लघुकथा के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों पर कड़ा प्रहार किया है। आपकी लघुकथाओं में सामाजिक संदेश देखने को मिलता है।

शिक्षा –

शिक्षा इस लघुकथा के माध्यम से लेखिका ज्योति जैन ने भ्रूणहत्या इस समस्या पर प्रकाश डाला है। लड़का पाने के लिए कई लोग प्रसुति पूर्व लिंग परीक्षण करते हैं। कन्या भ्रूण का पता चलते ही गर्भ में ही उसकी हत्या की जाती है। आज लड़का–लड़की ऐसा भेदभाव रखने का कोई कारण नहीं है। लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में लड़कों से कम नहीं है। फिर भी लोग लड़के के लिए गर्भलिंग परिक्षण करते हैं। हालांकि सरकार ने गर्भ लिंग परीक्षण पर पाबंदी लगायी है, कानून बनाये हैं। गर्भ लिंग करनेवाले चिकित्सक और लिंग चयन व निर्धारण करानेवाले व्यक्ति के लिए भी दंड की व्यवस्था सरकार ने की है। फिर भी लोग चोरी–चिपके घूस देकर गर्भ लिंग परीक्षण करने की कोशिश करते हैं। पढ़े–लिखे लोग भी गर्भ लिंग परीक्षण कर कन्या भ्रूण की हत्या करते हैं। गर्भ लिंग परीक्षण करना और गर्भ की हत्या करना गैरकानूनी है।

प्रस्तुत लघुकथा की नायिका नन्दिता को ठेले वाली औरत की कहीं बात बहुत बढ़ी शिक्षा देती है। वह कहती हैं–'पन मैं तो छोरी को नी मार सकूँ, चाहे पेट में, चाहे बाहर।'

'शिक्षा' इस लघुकथा की नायिका नन्दिता है। नन्दिता रोज ऑफिस से घर लौटते समय ठेले वाली औरत से फल खरीद लेती थी। हररोज फल लेने के बहाने नन्दिता उस औरत के पास रुकती थी। धीरे–धीरे दोनों में परिचय बढ़ता जाता है। कभी–कभी वह उसे स्वच्छता के बारे में सुझाव देती है, तो कभी पॉलिथीन की थैलियाँ ना रखने के बारे में सुझाव देती थी। उस फलवाली के पास हमेशा चार–पाँच लड़कियाँ खेलती दिखाई देती थी। एक छोटा बच्चा भी नजर आता था।

एक दिन नन्दिता जामुन खरीदते हुए कुतुहलवश ठेले वाली औरत को सवाल पूछती है, 'कितने बच्चे है तुम्हारे? छः छोरियाँ कुछ विद्रुपता से वह जवाब देती है। पास में ही एक बच्चा लेट रहा था। उसे देखकर

नन्दिता फिर सवाल करती है, 'यह लड़का है क्या?' यह आखरी छोरी होने का जवाब मिलता है। ठेलेवाली औरत को सात लड़कियाँ थीं। इस बात से नन्दिता परेशान होती है। और उपदेश देते हुए कहने लगती है, तुम लोग भी जरा भी नहीं सोचते। इतनी लाइन लगा लेते हो, और फिर पूरा जीवन मुश्किल में जीना जीते हो। अगर तुम्हें लड़का ही चाहिए था तो दूसरे में ही जाँच करनी चाहिए थी। तुम मुझे ही देखो पहली लड़की थी। फिर मैंने जाँच कराई और एक बेटी के बाद एक बेटा है।

ठेलेवाली औरत जामुन तोलती हुई नन्दिता से कहती है, 'मैं तो तुम्हारी तरह होशियार नहीं हूँ। ''मैं अपने पति से बहुत परेशान हूँ। उसे छोरा ही चाहिए। छोरा चाहिए इसलिए मैं अपनी छोरियों को कैसे मार दूँ?''[1] अब उसने लड़कियों की लाइन लगाई है तो उसे भूगतना ही पड़ेगा। पर मैं अपनी छोरी को नहीं मार सकती, चाहे पेट में हो या बाहर। उसकी यह बात सुनकर पढ़ी–लिखी नन्दिता को लगता है कि उसने झोले में जामुन नहीं शिक्षा डाल दी है। उस अनपढ़ औरत की इस बात पर नन्दिता केवल सोचती रह जाती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भ्रूणहत्या करना गैरकानूनी ही नहीं तो इन्सानियत के खिलाफ भी है। हमें कन्या लिंग के आधार पर किसी की हत्या करने का कोई अधिकार नहीं है। इस सुंदर सृष्टी पर जन्म लेने से किसी को रोकना तो प्रकृति के खिलाफ है। दुर्भाग्य की बात यह है कि अन्य प्राणियों से मनुष्य को बुद्धिमान माना जाता है और सभी प्राणियों में केवल मनुष्य प्राणी ही इस प्रकार का घिनौना काम करता है। जिसमें पढ़े–लिखे लोग अधिक दिखाई देते हैं। इसलिए ठेले वाली औरत की बात शिक्षित लोगों के लिए और भ्रूणहत्या करनवालों के लिए बहुत बड़ी शिक्षा देती है।

पानी के पेड़ –

'पानी के पेड़' इस लघुकथा के माध्यम से लेखिका ज्योति जैन ने पानी का महत्व एवं आनेवाले दिनों में पानी संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है। 'पानी ही जीवन है' यह हम बचपन से सुनते आये है। पर पानी की बर्बादी देखकर उसे रोकने के लिए हम एक कदम आगे नहीं बढ़ाते। अपनी जरूरत से ज्यादा पानी का इस्तेमाल करते हैं। बारिश होने पर ढेर सारा पानी बह जाता है। बारिश के पानी को जमीन में बांध के माध्यम से, जलाशय के माध्यम से बहुत बढ़े पैमाने पर बचाया जा सकता है। हर व्यक्ति थोडा–थोडा पानी बचायेगा तो बहुत पानी हम अपने लिए संग्रहीत कर सकते हैं। यही पानी हमें धूप के दिनों में काम आता है। इसी बात को लेखिका ने एक छोटी लड़की शालू के माध्यम से हमें समझायी है। इसमें उसकी कल्पना, निरागसता और समझदारी भी दिखाई देती है।

'पानी का पेड' इस लघुकथा की प्रमुख पात्र शालू नाम की एक छोटी लड़की है। बारिश का मौसम है। बारिश के मौसम में बच्चों को पानी के साथ खेलना बहुत पसंद होता है। वे अपने कपड़ों की चिंता किए बगैर खेलते रहते हैं। इस लघुकथा की नन्हीं शालू भी हाथ में खुरपी और लकड़ी लेकर अपने घर के पासवाले बगीचे में गड्ढे खोद रही थी। उसका फ्रॉक और पायजामा कीचड़ और बारिश के पानी से भीग चुके थे। उसी समय घर से आती माँ को वह देखती है। माँ को देखकर बड़े उत्साहित होकर वह माँ से कुछ कहना चाहती थी उसके पहले ही माँ का एक थप्पड उसके गालों पर पड़ जाता है। माँ द्वारा अचानक थप्पड़ लगने से उसके शब्द मुँह के अंदर ही रह जाते है और आँसू आँखों से बाहर निकल आते हैं। माँ गुस्सा अब भी कम नहीं हुआ था। वह डाटती हुए कहती हैं सारे कपड़े गंदे कर दिए। अंदर नहीं खेल सकती? और भी कई प्रकार की शिकायतें करती हुई उसकी बाँह पकड़कर खींची जाती है।

रूआँसी शालू अपनी और से सफाई देती हुई कहती है –''मैं तो आपके लिए पानी बो रही थी। माली भैया कह रहे थे गड्ढा खोदकर जो डालो वही उग आता है। आप गर्मी में कितने परेशान होते हो ना पानी के लिए, इसीलिए मैं पानी बो रही थी। अब पानी का झाड़ उगेगा। फिर आप परेशान नहीं होओगी न?''[2] माँ ने गुस्से में उसे तमाचा लगाया था। लेकिन बेटी की बातें सुनकर उसे पछतावा हो रहा था। अपराधबोध से माँ की आँखों में पानी भर आता है। शालू अनजाने में सही गर्मी के दिनों के अलावा भी पानी बचाने का सबक देती है। वह भावना विवश होकर शालू के गंदे कपड़ों की चिंता किए बगैर उसे अपनी गोद में लेती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लेखिका ने शालू के माध्यम से पानी बचाने का संदेश हमें दिया है। छोटी लड़की की छोटी सोच उसे महान बना देती है। बरसात के दिनों में हमें पानी को संग्रहीत करने की आवश्यकता होती है। बारिश का पानी जितना जमीन में संग्रहीत होगा उतनाही लाभ हमें गर्मी के दिनों में होगा। नहीं तो गर्मी के दिनों में पानी के लिए लोगों को बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। इस समस्या से मुक्ति

पाने के लिए बारिश का अधिक से अधिक पानी बचाना बहुत जरूरी है। पानी का महत्व को उजागर करती यह लघुकथा और लेखिका की 'पानी का पेड' यह संकल्पना निश्चित रूप से पाठकों को प्रभावीत करती है। और पानी बचाने का सबक दे जाती है।

पशुभाषा –

'पशुभाषा' इस लघुकथा के माध्यम से लेखिका ज्योति जैन ने प्यार की मौन भाषा का महत्व उजाकर किया है। मनुष्य संभाषण के लिए विचार–विमर्श के लिए भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के माध्यम से वह अपनी भावनाओं का आदान–प्रदान करता है। हावभाव, संकेत, आँखों की भाषा आदि के माध्यम से भी हम अपनी भावनाएँ प्रकट करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी एक भाषा होती है, प्यार की मौन भाषा। जिसे हृदय की भाषा भी कहा जाता है। जिसमें शब्द नहीं भाव होते हैं, फटकार नहीं ममत्व होता है, अपनापन होता है। जो कई बार बिगडती बातों को जोड़ने का काम करती है।

वर्तमान युग में मनुष्य को प्यार की मौन भाषा को सीखने की नितांत आवश्यकता है। छोटी–छोटी बातों को लेकर हम दंगा फसाद करने को उतर आते हैं। एक दूसरे के सीर फोड़ते हैं। धर्म, जाति, वंश भेद को लेकर हम दिवारे खड़े करते हैं। पर जिसे प्यार की मौन भाषा आ गयी वह दंगा नहीं प्रेम की नदियाँ बहा देता है। वही सही अर्थ से जीवन जीता है, दूसरों की मदद कर सकता है। फिर वह मनुष्य हो या पशु। इसी बात को लेखिका ने दो बिल्लियाँ और गाय के बछड़े के माध्यम से बहुत अच्छि तरह से हमें समझाया है।

एक दिन लेखिका के ड्राइंग रूम में दो बिल्लियाँ आती हैं। किसी कारण दोनों में झगड़ा शुरू होता है। धीरे–धीरे लड़ाई बढ़ जाती है थोड़े ही समय में दोनों ने रौद्र रूप धारण किया। पंजों से एक–दूसरों को मारकर दोनों भी लहूलुहान हो जाती है। लेखिका दोनों को घर से भगाती है। पर आँगन में आकर फिर दोनों में लड़ाई उसी प्रकार से शुरू हो जाती है। लेखिका उन्हें आँगन से भगाती है तो फुटपाथ पर जाकर दोनों जुड़ जाती है। झगड़े में दोनों के बाल खड़े हो गये थे। गुरगुराती हुई दाँत दिखाती थी और क्रोधिक आँखों के साथ ही खून से लथपथ होने के कारण दोनों भी भयानक लग रही थी।

बिल्लियों का झगड़ा रूकने का नाम नहीं ले रहा था। उनकी आवाज सुनकर मुहल्ले के सारे लोग एकट्ठा हो जाते हैं। कुछ लोग डंडे से फटकारते हैं तो कुछ लोग पाइप से पानी की बौछार करते हैं। फिर भी दोनों की लड़ाई रूकने का नाम नहीं ले रही थी। उसी समय पास ही गाय का एक बछड़ा जो सब्जी के छिलके खा रहा था उन बिल्लियों के पास धीरे से जाता है। और एक–एक करके जीभ से चाटने लगता है। सभी को लगता है बिल्लियाँ बछड़े पर हमला कर देगी। पर ऐसा हुआ नहीं पहली बिल्ली गुर्राते हुए बैक फुट की मुद्रा में जाती है। फिर दूसरी बिल्ली ने भी वही किया। ऐसा लग रहा था कि बछड़ा दोनों को जीभ से पुचकारकर कुछ समझा रहा है। सभी लोग भौचक्का होकर यह नजारा देख रहे थे। ''जिस झगड़े को इन्सानी डंडे की फटकार काबू में न कर सकी उसे एक मूक, विशुद्ध शाकाहारी बछड़े ने शायद सिर्फ प्यार की मौन भाषा ने हल कर दिया।''[3]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जो काम नफरत और बल के प्रयोग से संभव नहीं हो जाता वह प्यार की मौन भाषा से बहुत ही आसानी से संभव हो सकता है। या जहाँ अन्य भाषा विफल हो जाती है वहाँ प्यार की मौन भाषा काम कर जाती है। लेखिका ने एक घटना के माध्यम से इस लघुकथा में संदेश देने का प्रयास किया है कि मनुष्य को भी प्यार की यह मौन भाषा अवश्य सीख लेनी चाहिए।

अपशगुन –

'अपशगुन' इस लघुकथा के माध्यम से ज्योति जैन ने मनुष्य की अंधविश्वास भरी प्रकृति पर तीखा प्रहार किया है। भारतीय समाज में आज भी लोग अंधविश्वास में घिरे हुए दिखाई देते हैं। अपने सुख के लिए कई बार देवी–देवताओं के सामने पशुबलि देते हैं। तो गुप्तधन की प्राप्ति के लिए पशुओं की बलि या नर बलि भी देने को नहीं हिचकचाते। समाज में शुभ–अशुभ को लेकर कई मनगढंत कहानियाँ बनाई हैं। नेवले का मुँह दिखना, सुबह गाय का दर्शन होना, हथेली का खुजलाना, पानी की गागर लेकर औरत का दिखना, कौआ आँगन में बैठना, पलकों का झुकना, बिल्ली का रास्ता काँटना, छिपकली की आवाज, बाहर जानेवालों को टोकना, छिंकना, विधवा का मुँह दिखना, रात के समय कुत्ते का रोना, आदि कई श्रद्धा–अंधश्रद्धाएँ लोगों ने बनाई है। बिल्ली का रास्ता काँटना तो बहुत अशुभ मानते हैं। इसी कारण किसी काम के लिए बाहर जानेवाले लोग हमेशा चाहते

हैं कि बिल्ली उनका रास्ता न काट ले। प्रस्तुत कहानी में भी इसी समस्या पर प्रकाश डालने का प्रयास लेखिका ने किया है। कहानी में धन्ना सेठ के अंधविश्वास के कारण एक बिल्ली को अपनी जान खोनी पड़ती है।

बचपन में हम राजा–महाराजाओं की कहानियाँ पढ़ते थे। विजय नगर का राजा था। वह अपनी वीरता के लिए बहुत प्रसिद्ध था। वो ईश्वर का परम भक्त था। इस प्रकार की कहानियाँ बड़ी रूचि के साथ हम पढ़ते थे। उसी प्रकार लेखिका भी इस कहानी की शुरूआत करती है। एक धन्ना सेठ था जो ईश्वर का परम भक्त था। वह खूब पूजा–पाठ करता था। जितना विश्वास उसे ईश्वर पर था। उतनाही वह अंधविश्वासी था। किसी कामकाज के लिए वह बाहर निकलने पर किसी का टोकना या फिर छिंकना उसे बिलकुल पसंद नहीं था। अगर ऐसा होता तो वह लौटकर घर के भीतर जाता और पानी पीकर ही बाहर निकलता था। इसी प्रकार कई अंधविश्वासों को सत्य मानकर वह जी रहा था।

एक दिन सुबह वह बाहर जाने के लिए निकलता है। गाड़ी स्टार्ट कर आगे बढ़ाई थी। अरूणोदय की कम रोशनी में उन्हें ठीक से नजर नहीं आ रहा था। उसी समय एक बिल्ली रस्ते पर दिखाई देती है। बिल्ली को देखकर धन्ना सेठ डरते हैं। वह रास्ता न काट ले इस चक्कर में उसने गाड़ी जोर से आगे बढ़ाई। अचानक गाड़ी की गति बढ़ा दी। ''बिल्ली उसका रास्ता नहीं काट पाई। पर उसने बिल्ली की साँसों की डो काट दी।''[4] बिल्ली द्वारा रास्ता काटने पर कोई अनहोनी घटित न हो यह सोचनेवाला धन्ना सेठ स्वयं बिल्ली का रास्ता काटता है। अंधविश्वास के कारण वह एक प्राणी की जान लेता है।

निष्कर्षरूप में कहा जा सकता है कि मनुष्य कई अंधविश्वासों को साथ लेकर जीवन जीता है। अंधविश्वास के कारण उसने जो मनगढंत कहानियाँ बनाई है उसका कोई भी शास्त्रीय आधार नहीं है। समाज में व्याप्त इन अंधविश्वासों के कारण कई लोगों का जीवन दुःखमय बन गया है। अंधविश्वास बनाये रखना और उसका प्रचार–प्रसार करना अत्यंत गलत है। धन्ना सेठ के माध्यम से लेखिका ने मनुष्य की अंधविश्वास भरी प्रकृति पर तीखा प्रहार किया है।

संदर्भ –

1. शिक्षा – ज्योति जैन, हिंदी भाषा शिक्षण, संपादक – प्रो. डॉ. सदानंद भोसले, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली – 110002 पृ. 34
2. पानी का पेड़ – ज्योति जैन, हिंदी भाषा शिक्षण, संपादक – प्रो. डॉ. सदानंद भोसले, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली – 110002 पृ. 35
3. पशुभाषा – ज्योति जैन, हिंदी भाषा शिक्षण, संपादक – प्रो. डॉ. सदानंद भोसले, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली – 110002 पृ. 36
4. अपशगुन – ज्योति जैन, हिंदी भाषा शिक्षण, संपादक – प्रो. डॉ. सदानंद भोसले, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली – 110002 पृ. 37